अध्याय

15

गलता लोहा

शेखर जोशी

© NCERT not to be republished

लेखक-परिचय

1. शेखर जोशी का जन्म उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के ओलिया गाँव में 1932 ई.में हुआ था ।

2. उनकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर और देहरादून में हुई । इंटर पास करने के बाद ही इनका चयन सुरक्षा -विभाग के ई.एम. ई में हो गया था। 1986 तक सेवा देने के उपरांत स्वेच्छा से त्यागपत्र दे कर स्वतंत्र रूप से लेखन से जुड़े रहे।

3. शेखर जोशी नयी कहानी आंदोलन से उभरी युवा प्रतिभाओं में से एक हैं।उनकी कहानियां नई कहानी आन्दोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं।

4. उनकी रचनाओं में समाज के मेहनतकश वर्ग की पीड़ा, वेदना, और असुविधाओं का सफलतापूर्वक चित्रण किया गया है।

5. **प्रमुख रचनाएँ:-** दाज्यू, कोसी का घटवार, हलवाहा, साथ के लोग, मेन्टल, प्रतिनिधि कहानियाँ, नौरंगी बीमार है, बच्चे का सपना, बदबू, मेरा पहाड़ आदि हैं।

6. **पुरस्कार और सम्मान:-** महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार, साहित्य भूषण पुरस्कार, पहल सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, श्रीलाल शुक्ल सम्मान आदि हैं।

7. इनकी कहानियाँ विभिन्न भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, पोलिश और रूसी भाषाओं में भी अनुदित हो चुकी हैं।

8. पहाड़ों से सम्बद्ध होने के कारण शेखर जोशी की रचनाओं में प्रमुख रूप से पहाड़ी जीवन, उत्पीड़न, गरीबी, संघर्ष तथा धर्म और जाति से जुड़ी रूढ़ियों आदि समस्याओं को गंभीरता से उठाया गया है।

पाठ-परिचय

1. 'गलता -लोहा ' कहानी शेखर जोशी के द्वारा लिखी एक ऐसी कहानी है, जिसमें यथार्थ जीवन का मार्मिक चित्रण है। यह एक सामाजिक कहानी है, जिसका उद्देश्य जातिगत भेदभाव से उत्पन्न परिस्थितियों का सामना कर रहे एक युवक की मनोदशा का वर्णन करना है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि उच्च जाति का होने पर भी आज के समय में जातिगत अभिमान एक बेमानी सी बात है और जातीय आधार पर भाईचारे का असली स्वरूप कुछ और ही है। ऊँची जाति का व्यक्ति भी छोटा-मोटा कार्य कर सकता है और उसे ऐसा कार्य करने में खुद को छोटा महसूस नहीं करना चाहिए।

2. कहानी का मुख्य पात्र मोहन नाम का युवक है, जो बचपन में पढ़ने में अत्यंत मेधावी छात्र था। उसके पिता पुरोहिती का काम करते थे। मोहन अपने स्कूल का मेधावी छात्र था और उसके स्कूल के ही एक शिक्षक मास्टर त्रिलोकी सिंह उसमें भविष्य की अपार संभावना देख रहे थे। मास्टर त्रिलोकी सिंह के अनुसार मोहन बड़ा होकर सफल व्यक्ति बनेगा। मोहन

© JCERT not to be republished

का एक दोस्त था धनराम, जो निम्न जाति से ताल्लुक रखता था और मोहन एक ब्राह्मण परिवार से संबंध रखता था, लेकिन मोहन ने अपने मित्र धनराम से मित्रता करने में जातिगत भेदभाव को कभी आड़े नहीं आने दिया।

3. मोहन की पढ़ाई स्कूल में ठीक ठाक चल रही थी, लेकिन विद्यालय गांव से दूर होने के कारण उसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता था। मोहन के ही बिरादरी का एक संपन्न परिवार का युवक रमेश लखनऊ से गांव आता है और जब मोहन के पिता ने उसके सामने मोहन की पढ़ाई की स्थिति रखी तो वह मोहन को उसके साथ लखनऊ भेजने को राजी कर लेता है ये कहकर कि वह मोहन को लखनऊ में अच्छी शिक्षा दिलायेगा।

4. मोहन रमेश के साथ लखनऊ आ जाता है, लेकिन रमेश स्वार्थी निकलता है और वह मोहन को घरेलू कामकाज में इतना व्यस्त कर देता है कि मोहन अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख पाता। रमेश मोहन के पिता को जो बात कहकर मोहन को लखनऊ लाया था, वह उस बात को पूरी नहीं करता। इस तरह मोहन की पढ़ाई छूट जाती है, और एक अत्यंत मेधावी छात्र, जिसका भविष्य अत्यंत उज्जवल था, वह विपरीत परिस्थियों का शिकार होकर बेरोजगारी में अपने दिन गुजार रहा है।

5. अंत में हंसुया पजाने के क्रम में मोहन की मुलाकात अपने बचपन के मित्र धनराम से उसके आफर पर होती है और वहां वह समाज द्वारा बनाये गए खोखली जातिगत उच्चता को त्याग कर हथौड़े की चोट के द्वारा लोहे को गढ़ कर एक नया शक्ल देता है। निश्चित रूप से मोहन का ये नया जन्म है। क्योंकि वह तमाम जातिगत बन्धनों को त्यागकर अपने मन की आवाज के अनुसार अपने जीवन की दिशा का निर्णय लेता है।

शब्दार्थ:-

अनायास- बिना प्रयास के।

शिल्पकार- कारीगर।

अनुगूँज- प्रतिध्वनि।

निहाई- लोहे का ठोस टुकड़ा जिस पर लोहार लोहे को रखकर पीटते हैं।

ठनकता- कसा हुआ तेज स्वर।

खनक- आवाज।

हँसुवा- घास काटने का औजार।

बूते- वश।

पुरोहिताई- पुरोहित का काम करना।

यजमान- पूजा-पाठ कराने वाला।

निष्ठा- लगन।

संयम- नियंत्रण।

जर्जर- जो कमजोर एवं बेकार हो, टूटा-फूटा

© JCERT not to be republished

उपवास– भूखे रहना।

नि:श्वास– गहरी साँस।

रुद्रीपाठ– भगवान शंकर की पूजा के लिए मंत्र पढ़ना।

आशय– मतलब।

अनुष्ठान– धार्मिक कार्य।

अनुत्तरित– बिना उत्तर पाए।

कुंद– धारहीन।

धौंकनी– लोहे की नली।

कनिस्तर– लोहे का चौकोर पीपा।

पारखी– परखने की क्षमता रखने वाला।

धमाचौकड़ी– उछल-कूद।

साँप सुंघ जाना– डर जाना।

समवेत– सामूहिक।

कुशाग्र– तेज।

मॉनीटर— प्रमुख।

हमजोली– साथी।

हीनता– छोटापन।

प्रतिद्वंदी– मुकाबला करने वाला।

गुंजाइश– जगह।

दूणी– दुगुना।

सटाक्– डडा मारने की आवाज़।

संटी– छड़ी।

घोटा लगाना– रटना।

चाबुक लगाना– चोट करना।

ताप– गरमी।

सामर्थ्य– शक्ति।

घन– बड़ा व भारी हथौड़ा।

प्रसाद देना– दंड के रूप में वार।

विरासत– पुरखों से प्राप्त ज्ञान, संपत्ति आदि।

पैतृक– माँ-बाप का।

दारिद्रय– गरीबी।

विद्याव्यसनी– विद्या पाने की ललक रखने वाला।

उत्साहित– जोश में लाना।

डेरा तय करना– रहने का स्थान निर्धारित करना।

रेला– समूह।

बिरादरी– जाति।

साक्षात्– सामने।

हाथ बँटाना– सहयोग करना।

हैसियत– सामर्थ्य, शक्ति।

हीला-हवाली– ना-नुकुर करना।

मेधावी– होशियार।

लीक पर चलना– परंपरा के आधार पर चलना।

मुद्दा– विषय।

© JCERT not to be republished

बाबत– के बारे में।

फाल– लोहे का हिस्सा।

तत्काल– तुरंत।

मर्यादा– मान-सम्मान।

असमंजस– दुविधा।

सँड़सी– लोहे को पकड़ने का कैंचीनुमा औज़ार।

अभ्यस्त– अभ्यास से सँवरा।

सुघड़– सुंदर आकार वाला।

हस्तक्षेप– दखल।

आकस्मिक– अचानक।

अवाक्– मौन, चकित।

हाथ डालना– काम के लिए तैयार होना।

धर्मसंकट– दुविधा।

उदासीन– हटकर।

त्रुटिहीन– निर्दोष।

सर्जक— रचनाकार।

स्पर्धा– होड़।

प्रश्न- अभ्यास

1. कहानी के उस प्रसंग का उल्लेख करें, जिसमें किताबों की विद्या और घन चलाने की विद्या का जिक्र आया है ।

उत्तर:- जब त्रिलोक सिंह धनराम से तेरह का पहाड़ा सुनाने के लिए कहते हैं और याद नही रहने के कारण वह सुना नहीं पाता है।उसी प्रसंग में किताबों की विद्या और घन चलने की विद्या का जिक्र आया है।मास्टर त्रिलोक सिंह उस पर बेंत की बौछार करते हुए कहते हैं- 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे ! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ?'और वह अपने थैले से पाँच-छह दराँती निकलकर उसनें धार लगाने के लिए धनराम को दे देते हैं।

2. धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंदी क्यों नहीं समझता था ?

उत्तर:- बचपन से ही उसके मन में जातिगत हीनता का भाव भरा होने के कारण धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंदी नहीं मानता था बल्कि विद्या को वह उसका अधिकार समझता था।ऊपर से बार -बार मास्टर त्रिलोक सिंह का यह कहा जाना की मोहन एक दिन बड़ा आदमी बनेगा धनराम में हीनता की जड़ों को गहरे तक उसके मस्तिष्क में घर कर दिया था।

3. धनराम को मोहन के किस व्यवहार पर आश्चर्य होता है और क्यों ?

उत्तर:- मोहन जब हंसुए पर धार लगाने के क्रम में धनराम के यहाँ जाता है और खुद हथौड़े को हाथ में लेकर लोहे को आकार देने लगता है इसी घटना को देखकर धनराम

© JCERT not to be republished

को आश्चर्य होता है। इसलिए क्योंकि मोहन उच्च कुलीन ब्राहमण वर्ग से सम्बन्ध रखता है और उसका एक लोहार के यहाँ काम करना उसकी मर्यादा के विरुद्ध है। धनराम डर जाता है कि यदि किसी ने मोहन को मेरे यहाँ हथौड़ा चलाते देख लिया तो एक ब्राहमण से काम कराने के जुर्म में पता नहीं मुझे कौन सी सजा मिले।

4. मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा है?

उत्तर:- लेखक ने मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को उसके जीवन का नया अध्याय इसलिए कहा क्योंकि जिस भावी आशा के साथ मोहन इस शहर में आया था वह सारे सपने धरे के धरे रह गए ।यहाँ दिनभर वह घरेलू कार्यों में उलझा रहता था और पढाई के नाम पर सिर्फ खाना-पूर्ति होती थी ।यानि जो मोहन गाँव के विद्यालय में एक मेधावी, और प्रतिभावान छात्र था ।जिसके बारे में मास्टर त्रिलोक सिंह को यह विश्वास था कि वह पढ़ -लिखकर एक दिन बड़ा आदमी बनेगा । वही मोहन परिस्थितियों के जाल में फंसकर रह जाता है और वह इस शहर से कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाता है ।

5. मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने जबान की चाबुक कहा है और क्यों?

उत्तर:- मास्टर त्रिलोक सिंह के इस कथन को लेखक ने जबान की चाबुक कहा है जब धनराम तेरह का पहाडा मास्टर त्रिलोक सिंह को नहीं सुना पाता फिर वह अपनी जबान की चाबुक चलाते हुए धनराम को कहते हैं -'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे ! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ? इस कथन के द्वारा त्रिलोक सिंह धनराम को हीनता का बोध कराते हैं कि पढाई- लिखाई तुम्हारे बस की बात नहीं है तुम केवल लोहार का काम ही कर सकते हो।

6. (1) बिरादरी का यही सहारा होता है।

क. किसने किससे कहा ?

उत्तर:- मोहन के पिता वंशीधर जी ने अपनी बिरादरी के एक युवक रमेश से कहा।

ख. किस प्रसंग में कहा ?

उत्तर:- मोहन को आगे की पढाई के लिए रमेश लखनऊ ले जाने के लिए तैयार हो गया। इसी प्रसंग में रमेश के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मोहन के पिताजी ने उससे यह बात कही।

ग. किस आशय से कहा ?

उत्तर:- मोहन के पिताजी को लगा कि गाँव में रहकर मोहन की पढाई ठीक ढंग से नहीं हो पायेगी। अतः आगे की पढाई शहर में होने के कारण वह कुछ बन जायेगा।

घ. क्या कहानी में यह आशय स्पष्ट हुआ है ?

उत्तर:- नहीं, कहानी में इस प्रकार का आशय पूर्ण नहीं हुआ बल्कि शहर में जा कर मोहन कि प्रतिभा का ह्रास ही हुआ।

© JCERT not to be republished

(2) उसकी आँखों में एक सर्जक की चमक थी –कहानी का यह वाक्य–

क. किसके लिए कहा गया है ?

उत्तर:– कथा नायक मोहन के लिए।

ख . किस प्रसंग में कहा गया है ?

उत्तर:– जब मोहन धनराम के आफर पर हथौड़े के प्रयोग से लोहे का एक छल्ला बनता है। उसी प्रसंग में यह बात कही गयी है।

ग. यह पात्र–विशेष के किन चारित्रिक पहलुओं को उजागर करता है ?

उत्तर:– इस से मोहन के उस विशेषता का पता चलता है कि वह परम्परागत जाति–बंधन को तोड़कर अपने मन की आवाज सुनता है यही कारण है कि वह पुरोहित का पुत्र होने के बाद भी अपने बाल सखा धनराम के आफर पर काम करता है। यह कार्य उसकी बेरोजगारी की दशा को भी व्यक्त करता है। वह अपने मित्र से काम न होता देख उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ा देता है और काम पूरा कर देता है।

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. 'गलता लोहा' शीर्षक कहानी के लेखक हैं–

(क) प्रेमचंद।

(ख) शेखर जोशी।

(ग) यशपाल।

(घ) मन्नू भंडारी।

Ans– (ख) शेखर जोशी।

2. 'गलता लोहा' शीर्षक कहानी में किस प्रमुख समस्या को उजागर किया गया है?

(क) शोषण की समस्या।

(ख) भ्रष्टाचार की समस्या।

(ग) जातिगत भेदभाव की समस्या।

(घ) महँगाई की समस्या।

Ans– (ग) जातिगत भेदभाव की समस्या।

3– खेत में जाते समय मोहन के हाथ में क्या था?

(क) तलवार।

(ख) हँसुवा।

(ग) गंडासी।

(घ) लाठी।

Ans– (ख) हँसुवा।

4. मोहन हँसुवा लेकर किस उद्देश्य से निकला था?

(क) लड़ाई करने।

(ख) खेत में उगी झाड़ियाँ काटने।

(ग) हँसुवे की धार लगवाने।

© JCERT not to be republished

(घ) धनराम से मिलने।

Ans- (ख) खेत में उगी झाड़ियाँ काटने।

5. वंशीधर का मुख्य व्यवसाय क्या था?

(क) खेतीबाड़ी।

(ख) अध्यापन।

(ग) शिल्पकारी।

(घ) पुरोहिताई।

Ans. (घ) पुरोहिताई।

6. वंशीधर ने चंद्रदत्त के घर जाकर किस पाठ के करने के लिए मोहन से कहा था?

(क) माँ काली का पाठ।

(ख) रामचरितमानस पाठ।

(ग) रुद्रीपाठ।

(घ) गरुढ़पुराण पाठ।

Ans- (ग) रुद्रीपाठ।

7. मोहन के अध्यापक का नाम था-

(क) सोहन सिंह।

(ख) वंशीधर।

(ग) गोपाल दास।

(घ) त्रिलोक सिंह।

Ans- (घ) त्रिलोक सिंह।

8. कहानी में गोपाल सिंह कौन है?

(क) दुकानदार।

(ख) सब्जीवाला।

(ग) गीतकार।

(घ) अध्यापक।

Ans- (क) दुकानदार।

9. 'साँप सूंघ जाना' का अर्थ है।

(क) साँप का काटना।

(ख) साँप का चाटना।

(ग) चुप हो जाना।

(घ) खो जाना।

Ans- (ग) चुप हो जाना।

10. धनराम का संबंध किस जाति से है?

(क) पुरोहित।

(ख) ब्राह्मण।

(ग) लोहार।

(घ) हरिजन।

Ans- (ग) लोहार।

11.धनराम किस कक्षा तक पढ़ पाया था?

(क) दूसरे दर्जे तक।

(ख) तीसरे दर्जे तक।

(ग) चौथे दर्जे तक।

(घ) पाँचवें दर्जे तक।

Ans- (ख) तीसरे दर्जे तक।

12.मास्टर जी की आवाज़ कैसी थी?

© JCERT not to be republished

(क) मधुर।

(ख) सुरीली।

(ग) कड़क।

(घ) धीमी।

Ans- (ग) कड़क।

13.धनराम के पिता का नाम था?

(क) गोपाल सिंह।

(ख) वंशीधर।

(ग) त्रिलोक सिंह।

(घ) गंगाराम।

Ans- (घ) गंगाराम।

14.मोहन ने मास्टर त्रिलोक सिंह की कौन-सी भविष्यवाणी को सिद्ध कर दिखाया था?

(क) बड़ा आदमी बनने की।

(ख) बड़ा अफसर बनने की।

(ग) छात्रवृत्ति प्राप्त करने की।

(घ) उत्तीर्ण होने की।

Ans- (ग) छात्रवृत्ति प्राप्त करने की।

15.रमेश किस नगर में नौकरी करता था?

(क) बनारस।

(ख) झाँसी।

(ग) कानपुर।

(घ) लखनऊ।

Ans- (घ) लखनऊ।

16.रमेश मोहन को क्या समझता था?

(क) भाई-बिरादर।

(ख) नौकर।

(ग) संबंधी।

(घ) मित्र।

Ans- (ख) नौकर।

17.मोहन अपनी वास्तविकता नहीं बताना चाहता था, क्योंकि?

(क) वह अपने पिता को दुःख नहीं पहुँचाना चाहता था।

(ख) वह लखनऊ में मौजमस्ती करता था।

(ग) वह पढ़ाई में व्यस्त था।

(घ) वह रमेश को नाराज नहीं करना चाहता था।

Ans- (क) वह अपने पिता को दुःख नहीं पहुँचाना चाहता था।

18.ब्राह्मण टोले के लोग शिल्पकार टोले में बैठना नहीं चाहते क्योंकि?

(क) वे उन्हें श्रेष्ठ समझते हैं।

(ख) वे शिल्पकारों को नीच समझते हैं।

(ग) वे उन्हें गरीब समझते हैं।

(घ) वे उन्हें मूर्ख समझते हैं।

Ans- (ख) वे शिल्पकारों को नीच समझते हैं।

© JCERT not to be republished